International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.959 Volume 9, Issue 6, June 2022
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

भारत में मतदान व्यवहार-: एक वश्लेषण

Dr. Reena
Department of Political Science, Vaish College, Bhiwani, Haryana 127021
Corresponding author- Email- ashureena1142@gmail.com

संक्षेप:

कसी भी लोकतंत्रिय शासन प्रणाली की सफलता एवं कार्यान्वयन इस बात पर निर्भर करता है क उस क्षेत्र में रहने वाले मतदाता अपने संवैधानिक अ धकार मतदान का प्रयोग करते समय कन- कन सकारात्मक तथ्यों को ध्यान में रखते हैं तथा अपने अ धकारों के प्रति कतने सचेत हैं। भारत ने **15** अगस्त **1947** को ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी की जंजीरें उतारकर स्वतंत्रता प्राप्त की तत्पश्चात **26** जनवरी **1950** को भारत का सं वधान लागू हुआ जिससे भारत में संपूर्ण प्रभुसत्ता संपन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य की नींव रखी गई । इसके अंतर्गत भारत के समस्त नागरिकों को बिना कसी जाति, रंग, लंग,भाषा भेदभाव के मतदान का अ धकार दिया गया। जब सं वधान लागू हुआ तब मतदान की आयु 21 वर्ष निर्धारित की गई थी ले कन 61 में संवैधानिक संशोधन के द्वारा 1989 में मतदान की आयु को 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दिया गया। **1951** में भारत में प्रथम आम चुनाव हुए जिसमें भारतीय मतदाताओं ने अपने संवैधानिक अ धकार मतदान का प्रयोग करते हुए अपने प्रतिनि धयों को चुनने का काम कया जैसा क हम सभी जानते हैं क भारत वश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है इस लए भारत में होने वाले चुनाव और चुनाव में मतदाताओं की भू मका पर संपूर्ण वश्व की नजर रहती है। भारत एक व वधताओं वाला देश है जिसमें सभी धर्मों रंगों लंगो संस्कृतियों भाषाओं के लोग रहते हैं। इस लए भारत में भारत के चुनाव में मतदाता व भन्न तत्वों से प्रभा वत होकर अपना मतदान करता है प्रस्तुत शोध पत्र में उन्हीं तत्वों का वस्तार सहित वर्णन कया गया है।

कुंजी शब्द: *लोकतंत्र, सामाजिक ,आ र्थक, क्षेत्रीय सांस्कृतिक, नैतिक, व्यवहार, राजनीतिक, लोकतंत्र*

प्रस्तावना:

वर्तमान समय में वश्व में व भन्न प्रकार की शासन प्रणाली पाई जाती हैं जैसे संसदीय शासन प्रणाली ,अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली, लोकतंत्र शासन प्रणाली, राजतंत्र शासन प्रणाली, गणतंत्र शासन प्रणाली , संघात्मक, एकात्मक आदि। परंतु इन सब में सबसे लोक प्रय शासन प्रणाली लोकतंत्रीय शासन प्रणाली है जिसकी स्थापना वश्व के लगभग सभी देशों में की गई है । अब्राहम लंकन के अनुसार लोकतंत्र लोगों का लोगों के लए और लोगों के द्वारा शासन होता है लोकतंत्र शासन प्रणाली में जनता अपने प्रतिनि धयों का चुनाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से करती है। चुने हुए प्रतिनि धयों से यह अपेक्षा की जाती

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

है क वह अपनी शक्तियों का प्रयोग जनता की भलाई एवं कल्याण के लए करेंगे। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में लोकतंत्र की स्थापना की गई थी। इस बात में कोई संदेह नहीं है क भारतीय सं वधान निर्माताओं ने भारत के सं वधान का निर्माण करते समय व भन्न देशों के सं वधानों का अध्ययन कया और जो बातें हमारे देश की परिस्थितियों के अनुकूल और जनता के वकास में सहायक थी उन प्रावधानों को अपने देश के सं वधान में लखा ।भारतीय सं वधान पर सबसे अ धक प्रभाव ब्रिटिश सं वधान का रहा । परंतु भारतीय सं वधान निर्माताओं ने इंग्लैंड की राजतंत्रीय व्यवस्था के स्थान पर लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की । लोकतंत्र का आधार जन्म अथवा शक्ति नहीं अ पतु चुनाव होता है ।बिना स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव के कोई भी लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता और चुनाव में सबसे महत्वपूर्ण भू मका मतदाताओं के द्वारा निभाई जाती है। एक मतदाता अपने मत का प्रयोग करते समय व भन्न तत्वों को ध्यान में रखता है यह तत्व आंतरिक भी हो सकते हैं और बाहरी भी। एक मतदाता जिन तत्वों से प्रभा वत होकर कसी राजनीतिक दल के पक्ष में तथा कसी राजनीतिक दल के वपक्ष में अपने मत का प्रयोग करता है उसका अध्ययन करने को मतदान व्यवहार कहते हैं । चुनाव वश्लेषण का ही एक अंग मतदान व्यवहार होता है। चुनाव में कस पार्टी की जीत होगी, कसकी हार होगी, कस राजनीतिक दल को कतना मत प्रतिशत हा सल होगा ,इन सभी का वश्लेषण मतदान व्यवहार से ही लगाया जाता है।मतदान व्यवहार जनसंख्यात्मक लक्षणों ,सामाजिक ,आ र्थक सांस्कृतिक, नैतिक आदि तत्वों एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है।राजनीतिक वश्व वद्यालय के प्रोफेसर - स्टीफन वास्बी (न्यूयॉर्क स्टेट यूनिव र्सटी, राजनीति वज्ञान वभाग) के अनुसार:"मतदान व्यवहार के अध्ययन में व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक बनावट और राजनीतिक कार्रवाई के साथ-साथ संस्थागत पैटर्न, जैसे संचार प्र क्रया और चुनावों पर उनके प्रभाव का वश्लेषण शा मल है।"भारत में सर्वप्रथम 1951- 52 में लोकसभा चुनाव हुए थे उस समय भी मतदान व्यवहार का वश्लेषण कया गया था ले कन व्यवस्थित रूप से मतदान व्यवहार का अध्ययन 1960 के दशक में शुरू हुआ। मतदान व्यवहार के व्यवस्थित अध्ययन में महत्वपूर्ण भू मका रजनी कोठारी तथा माइनर वीनर नामक वद्वानों ने निभाई। **1980** के दशक में प्रणय रॉय और अशोक लाहिरि की पुस्तक ने इसे नई गति प्रदान की । ले कन **1990** के दशक से ही चुनावों का अध्ययन निर्बाध गति से हो रहा है। इसके प्रमुख कारण लोकसभा तथा वधानसभा के चुनावों में निरंतर हो रही मत प्रतिशत की वृ द्ध हैं।

भारत में जब चुनाव होते हैं तो संपूर्ण वश्व की दृष्टि भारत में होने वाले चुनाव पर होती है। लोकसभा , राज्यसभा चुनावों में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के मुद्दे , वधानसभा चुनाव में राज्य स्तर के मुद्दे, नगर निगम ,नगर पा लका, जिला परिषद, ब्लॉक स मति एवं ग्राम पंचायत के चुनाव में क्षेत्रीय तथा स्थानीय हित के मुद्दों को महत्ता दी जाती है। इसके साथ-साथ भारतीय समाज में पाई जाने वाली सामाजिक, आ र्थक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नैतिक व वधता भी चुनाव में महत्वपूर्ण भू मका निभाती है । प्रेस एवं मी डया, राजनीतिक दल, धर्म ,भाषा ,रंग , लंग, नेतृत्व की क्षमता,भी चुनाव में अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं। इन सभी तत्वों का अध्ययन मतदान व्यवहार में कया जाता है ले कन परंतु भारत जैसे वशाल देश में मतदान व्यवहार का अध्ययन करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। भारत में ना केवल राष्ट्रीय,राज्य ,जिला , ब्लॉक एवं ग्रामीण स्तर पर स्तर पर मतदाताओं के व्यवहार में अंतर पाया जाता है अ पतु एक ही निर्वाचन क्षेत्र में भी मतदाताओं के व्यवहार में जमीन आसमान का अंतर पाया जाता है जिसके आधार पर मतदान व्यवहार के तत्वों के बारे में सामान्य निष्कर्ष निकालना संभव नहीं हो पाता है। भारत एक बहु भाषाई देश है जिसमें

मतदान व्यवहार का अध्ययन करने वालो के लए भाषा भी एक समस्या के रूप में उभर कर सामने आती है क्यों क जब भी मतदाताओं से संपर्क स्था पत कया जाता है तो उसमें भाषा एक अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाती है। जब तक मतदाताओं से उनकी भाषा में संवाद नहीं होता तब तक मतदान व्यवहार के सटीक तथ्यों के बारे में जानकारी हा सल नहीं हो पाती है। कई बार नेताओं के साक्षात्कार के दौरान बहुत सारे प्रश्नों का उत्तर भी नहीं दिया जाता है तथा कई प्रश्नों के उत्तर में टालमटोल की जाती है जिससे तथ्यों की सही जानकारी नहीं मल पाती।

भारत में मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने वाले तत्व

धर्म:

धर्म भारत की राजनीति और मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने वाला सबसे बड़ा तत्व धर्म है वश्व का कोई भी धर्म या संप्रदाय ऐसा होगा जो भारत में पाया ना जाता हो अगर हम इतिहास को उठाकर देखें तो भारत का वभाजन भी धर्म और संप्रदाय के आधार पर ही हुआ था देश के वभाजन के पश्चात हमारे देश में सांप्रदायिकता कम होने के स्थान पर निरंतर बढ़ती जा रही है और भारत के राजनेता राजनीतिक दल भी इस कमजोरी का फायदा उठाने से पीछे नहीं हटते हैं भारत के निर्वाचन क्षेत्रों में राजनीतिक दल अपनी टिकट का वतरण करते समय क्षेत्र में पाए जाने वाले धर्म को बहुत अ धक महत्व देते हैं भारत में अकाली दल, मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा, वश्व हिंदू परिषद ,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि अनेक धा र्मक संगठन एवं राजनीतिक दल पाए जाते हैं जो लोगों की धा र्मक भावनाओं को बढ़ाकर अपने स्वार्थों की पूर्ति के लए निरंतर प्रयासरत रहते हैं।

जाति:

भारत में मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने वाला दूसरा सबसे बड़ा तत्व जाती है। भारत में अगर हम देखें तो प्राचीन काल से ही जाति प्रथा भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा रही है वैदिक काल में जाति प्रथा कर्मों पर आधारित थी और भारत में चार वर्ण पाए जाते थे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र धीरे-धीरे जाति प्रथा ने वकृत रूप धारण कर लया और मनुष्य की जाति का निर्धारण कर्म पर आधारित ना होकर जन्म पर आधारित हो गया और जातियों की भी कई उपजातियां बन गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जाति ने भारतीय राजनीति को वृहद स्तर पर प्रभा वत कया। योग्यता एवं राजनीतिक दलों के प्रति प्रतिबद्धता को नजरअंदाज करते हुए प्रत्या शयों के चुनाव में राजनीतिक दलों के द्वारा जाति को महत्व दिया जाता है। इतना ही नहीं निर्वाचन क्षेत्र से प्रत्याशी की जीत और हार को भी निर्धारित करने में जाति अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाती है। भारत की राजनीति में राजनीतिक दलों का निर्माण भी जाति पर आधारित होता जा रहा है जैसे लोकदल पार्टी बहुजन समाज पार्टी समाजवादी पार्टी आदि। भारत में एक लोकोक्ति भी काफी प्र सद्ध पाई जाती है क जाति की बेटी जाति को और जाति का वोट जाति को इस आधार पर हम कह सकते हैं क भारत के अ धकांश चुनाव क्षेत्रों में मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने वाला तत्व जाती है जिस से प्रभा वत होकर मतदाता कसी राजनीतिक दल के पक्ष में और कसी राजनीतिक दल के वपक्ष में अपने मत का प्रयोग करता है।

व्यक्तित्व:

एक उम्मीदवार का व्यक्तित्व भी मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने में अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाता है एक प्रभावशाली व्यक्ति मतदाताओं को अपनी और आक र्षत करने में सफल हो जाता है और दूसरों के तुलना में अ धक मत प्रतिशत हा सल करता है। हमारे देश में अनेक चमत्कारी नेतृत्व के धनी नेता हुए हैं जैसे भारत में पहले तीन चुनाव में पं डत जवाहरलाल नेहरु जी का नेतृत्व ही था जिसके द्वारा भारत में राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस की सरकार की स्थापना हुई थी। 1977 में पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर गैर कांग्रेसी सरकार की स्थापना में जनता दल की महत्वपूर्ण भू मका थी जिसके प्रभावशाली नेता जयप्रकाश नारायण का ही योगदान था ले कन दुर्भाग्यवश यह सरकार अ धक समय तक नहीं चल पाई 1980 में पुणे चुनाव होने पर इंदिरा गांधी और 1984 में राजीव गांधी की राष्ट्रीय स्तर पर सरकार बनने का कारण मृतकों की अद्भुत क्षमता ही थी वर्तमान समय में भी भारतीय जनता पार्टी के नेता नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व के कारण ही पार्टी लगातार दो बार स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने में सफल हुई है।

सामाजिक संबंध:

सामाजिक संबंध भी भारतीय मतदाताओं के मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने में अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाता है। यदि कसी निर्वाचन क्षेत्र में कसी परिवार का व्यक्ति खड़ा हो जाता है तो निसंदेह उसके परिवार के लोग, रिश्तेदार ,सगे संबंधी , मत्र सभी उसी के पक्ष में मत देते हैं तथा प्रचार प्रसार भी उसी के पक्ष में करते हैं। भारत में परिवारवाद की नीति प्राचीन काल से चली आ रही है ।यदि हम इतिहास को उठाकर देखें तो पता चलता है क केंद्र में पं डत नेहरू के समय से लेकर केवल कुछ समय के काल को छोड़ दिया जाए तो भारतीय राजनीति में एक ही परिवार का बोलबाला रहा है । इसी लए हम कह सकते हैं क भारतीय राजनीति में परिवारवाद कतनी बड़ी भू मका निभाती है ।आम मतदाता भी मत डालते समय प्रत्याशी के परिवार को ध्यान में रखता है। पाश्चात्य राजनीतिक वचारक परिवारवाद की राजनीति को लोकतंत्र शासन प्रणाली के लए बहुत ही खतरनाक मानते हैं क्यों क इससे कुशल, योग्य एवं इमानदार प्रतिनि ध के चुनने में बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न होती है। परंतु वर्तमान समय में शक्षा के स्तर में होने वाली वृ द्ध तथा राजनीतिक चेतना के वकास में मतदाताओं को अपने मत का सोच समझकर सही प्रयोग करने में अपनी भू मका निभाई है।

आ थक स्थिति:

धन भी मतदान व्यवहार को प्रभा वत करता है क्यों क भारत में अ धकांश जनता गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने के लए ववश है। यहां पर लोगों की मूलभूत आवश्यकता जैसे रोटी ,कपड़ा और मकान भी पूरी नहीं हो पाती है। ऐसी परिस्थितियों में गरीब मतदाता अपने मत को बेचने के लए मजबूर हो जाते हैं। राजनीतिक दलों के द्वारा चुनाव प्रचार प्रसार के दौरान धन का दुरुपयोग कया जाता है ।मतदाताओं के मत को खरीदने के लए पैसा पानी की तरह बहाया जाता है तथा उन्हें प्रलोभन दिए जाते हैं। चुनाव आयोग के द्वारा चुनाव में खर्च कए जाने के लए निर्धारित धनरा श से ज्यादा ही खर्च राजनीतिक दलों के द्वारा कया जाता है। देश की आ थक स्थिति भी मतदान व्यवहार को प्रभा वत करती है। सत्तारूढ़ दल के शासन में महंगाई भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी कालाबाजारी आदि अगर बढ़ता है तो आगामी चुनावों में उस दल के पुणे सत्ता में आने के अवसर ना के बराबर होते हैं जिस सरकार में अनेक घोटाले कए हैं वह भी सत्ता में आने की आशा खो देती है यदि सत्तारूढ़ दल ने आ थक स्थिति सुधारी हो और जनता के कल्याण के लए काम कए हो जनता की

मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति जैसे रोटी कपड़ा और मकान के लए उ चत कदम उठाए हो तो उसके सत्ता में आने की संभावनाएं प्रबल होती है मतदाता अपना मतदान करते समय इन सभी बातों को भी ध्यान में रखता है। भारत में भाषा भी भारतीय मतदाताओं को प्रभा वत करती है । जैसा क हम सभी जानते हैं क भारत एक बहु भाषाई राज्य है । यहां पर कहावत है "कोस कोस पर बदले पानी चार कोस पर वाणी "। इस लए भारत में भाषा के नाम पर चुनाव लड़े भी जाते हैं और जीते भी जाते हैं। उत्तर ,द क्षण ,पूरब ,पश्चिम के राज्यों में चुनावों का मुख्य आधार भाषा भी होता है। भारत के द क्षणी क्षेत्र के राजनीतिक दल हिंदी के वरोध में जितना प्रबल प्रचार प्रसार करते हैं उतने ही उनकी जीतने की संभावनाएं भी अ धक हो जाती है ।

क्षेत्रवाद:

क्षेत्रवाद की प्रवृत्ति मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण कारक है भारत में 8 राष्ट्रीय दल है परंतु कोई भी द लत ना प्रभावशाली नहीं है क वह क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के सहयोग के बिना सरकार बनाने में सक्षम हो जिसके परिणाम स्वरुप भारत में गठबंधन की सरकारें बनती है 1989 से लेकर 2014 तक भारत में कसी भी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मला है जिसके परिणाम स्वरुप गठबंधन की सरकार एवं त्रिशंकु संसद का निर्माण भारत में होता आया है। केंद्रीय स्तर के साथ-साथ राज्य स्तर पर भी क्षेत्रीय दलों की गठबंधन की सरकार है स्था पत होने लग गई है। क्षेत्रवाद की यही प्रवृत्ति भारत की राष्ट्रीय एकता और अखंडता में बाधा पहुंच आती है और मतदान व्यवहार में नकारात्मक भू मका निभाती है राजनीतिक दलों की नीतियां और कार्यक्रम भी भारतीय मतदाता के मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने में अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं भारत की जनता अ श क्षत अंध वश्वास प्रथा और परंपराओं में जकड़ी हुई है ऐसी स्थिति में उनकी राजनीतिक गति व धयों में एवं राजनीतिक क्रयाकलापों में रु च कम होती है। ऐसी स्थिति में संगठित राजनीतिक दल अपने कार्यकर्ताओं के माध्यम से मतदाताओं के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्था पत करने की को शश करते हैं और वोट बैंक को अपने पक्ष में करने का प्रयास करते हैं।

तत्कालीन मुद्दे:

चुनावों के समय तत्कालीन मुद्दे भी मतदान व्यवहार को प्रभा वत करते हैं जैसे भारत चीन युद्ध ,भारत पा कस्तान युद्ध 1980 में इंदिरा गांधी जी द्वारा गरीबी हटाओ का नारा, 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या तथा सख दंगे, राजीव गांधी के कार्यकाल में फोर्स ,फेयरफैक्स घोटाले , राम मंदिर और बाबरी मस्जिद का मुद्दा,2014 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी जी के द्वारा काले धन वापसी , भ्रष्टाचार को समाप्त करने के मुद्दे आदि। 2019 के लोकसभा चुनाव में महंगाई लोकपाल बिल का मामला कश्मीर पा कस्तान पर भारतीय सरकार का नजरिया आदि मुद्दे प्रमुख रहे थे। चुनावों के समय देश में व्याप्त सामाजिक आ र्थक, नैतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियां भी भारतीय मतदाता के व्यवहार को प्रभा वत करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाती है

उपरोक्त आधार पर हम कह सकते हैं क कोई भी एक तत्व भारतीय मतदाता के व्यवहार को अकेला प्रभा वत नहीं करता अ पतु व भन्न तत्व आपस में मलकर सामूहिक रुप से मतदान व्यवहार को प्रभा वत करने में अपनी भू मका निभाते हैं। यह सभी तत्व एक दूसरे पर अंतर निर्भर होते हैं जैसे आ र्थक परिस्थितियां ही मनुष्य के सामाजिक स्तर को निर्धारित करती है और उसी के आधार पर वह अपने मतदान का प्रयोग करता है ।

निष्कर्ष:

अंत में हम कह सकते हैं क एक मतदाता अपने मत का प्रयोग करते समय अनेक तथ्यों पर वचार वमर्श करके अपने मत का प्रयोग करता है। मतदाता की राजनीतिक जागरूकता एवं राजनीतिक समझ ही उसकी स क्रय भागीदारी को सुनिश्चित करती है । इसी लए एक मतदाता को ना केवल स्थानीय या क्षेत्रीय अ पतु राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं पर वचार करके अपने मतदान का प्रयोग करना चाहिए। क्यों क लोकतंत्र शासन प्रणाली को सफल बनाने में मतदाताओं की भू मका सबसे अहम होती है।

संदर्भ सूची-:

1. भारतीय शासन एवं राजनीति बीएल फ डया, पुखराज जैन, साहित्य भवन प्रकाशन
2. भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार- डॉ श्रीमती कल्पना वैश्य नवभारत प्रकाशन
3. भारत में राजनीतिक प्र क्रया- अभय प्रसाद संह, कृष्ण मुरारी, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रकाशन
4. भारतीय शासन -एम लक्ष्मीकांत, मैकग्रा हिल प्रकाशक
5. भारतीय सरकार एवं राजनीति - नीरज पब्लिकेशन
6. भारतीय सरकार एवं राजनीति- के के गुप्ता ,लक्ष्मी बुक डपो प्रकाशक
7. भारत में सरकार एवं राजनीति- स्ट्रेटफारवर्ड प्रकाशक
8. https://hindi.newslaundry.com/2019/05/13/1989-91-rajiv-gandhi-v-p-singh-chandra-shekhar-p-v-narasimha-rao-bjp-congress-loksabha-electonslUnHkZ
9. https://www.amarujala.com/photo-gallery/india-news/lok-sabha-chunav2019-all-you-need-to-know-about-1984-lok-sabha-election-congress-bjp
10. https://www.pratiyogitatoday.com/rajnitik-sanskriti-ke-nirdharak-tatva/
11. भारतीय शासन एवं राजनीति -श्री चक्रधर पब्लिकेशन प्राइवेट ल मटेड
12. भारत में राजनीति कल और आज-रजनी कोठारी वाणी प्रकाशन